Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की काव्य-चेतना: संस्कृति, संवेदना और सृजनशीलता का समागम

डॉ. मनीष कुमार भारती
पोस्ट डॉक्टरल फेलो, हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार-845401

शोध-सार

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की काव्य चेतना में भारतीय संस्कृति, परंपरा, और राष्ट्रीयता का गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उनकी रचनाओं में भारतीय दर्शन और जीवन मूल्यों का प्रकट होना उनकी गहन वैचारिकता और सांस्कृतिक जुड़ाव को स्पष्ट करता है। उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता, सामाजिक समस्याओं, आध्यात्मिकता, और मानवीय मूल्यों का संयोजन मिलता है। आचार्य शास्त्री का काव्य भारतीयता की गहराई में उतरता है और राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उनकी कविताएं न केवल समाज को प्रेरित करती हैं, बल्कि उनमें चेतना का बीजारोपण भी करती हैं। उनका काव्य किसी भी प्रकार की विदेशी सत्ता और संस्कृति के अधीनता को नकारता है और भारतीयता को गर्व से अपनाने की प्रेरणा देता है। विष्णुकांत शास्त्री के काव्य में आध्यात्मिक चेतना का विशेष स्थान है। उनकी रचनाओं में भारतीय वेदांत दर्शन, उपनिषदों, और भगवद्गीता के विचारों की झलक मिलती है। शास्त्री जी की कविताएं व्यक्ति को आत्मिक शांति और आंतरिक संतुलन की ओर प्रेरित करती हैं। उनका काव्य समाज की नैतिकता और मूल्यबोध पर भी आधारित है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, और सामाजिक भेदभाव का विरोध किया। उनके काव्य में व्यक्ति को एक सच्चे मानव बनने की प्रेरणा मिलती है। वे समाज में प्रेम, करुणा, और समरसता की भावना का संदेश देते हैं।

बीज शब्दः राष्ट्रीय चेतना, आध्यात्मिकता, उपनिषद, वेदांत, मूल्यबोध, सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक गौरव, असिधार आदि।

मूल आलेख

साहित्य जगत् में आचार्य विष्णुकांत शास्त्री विद्वान, समालोचक एवं निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। किन्तु आम जनमानस के बीच प्रतिष्ठित समालोचक के साथ-साथ सम्मोहक वक्ता एवं एक स्वच्छ छवि वाले कुशल राजनेता के रूप में भी जाने जाते हैं। कविता के प्रति उनका अनन्य अनुराग साहित्यिक मित्रों से छुपा नहीं था, किन्तु उनकी कविताएं और उनका कवि रूप उनकी व्यक्तिगत डायरी तक ही सीमित था। उनकी व्यक्तिगत डायरी से कविताओं को पाठकों के समक्ष लाने में डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी का विशेष योगदान है। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की स्वीकारोक्ति है कि, "कविता मेरे लिए प्रीतिकर जीवन-उर्जा है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में मुझे बराबर कविता से शक्ति मिलती रही है।"[1] आचार्य शास्त्री की काव्य पुस्तक 'जीवन-पथ पर चलते-चलते' कुल पांच खंडों में विभक्त है, जिसमें प्रथम खंड 'हो सचेतन राष्ट्र-जीवन के अंतर्गत' राष्ट्रीय कविताएं, दूसरे खंड 'सर्जना आयाम विविधा' के अंतर्गत विविध रंग की रचनाएं, तीसरे खंड 'प्रेरणा देता किसी का प्यार' के अंतर्गत प्रेमपरक कविताएं, भक्तिपरक कविताएं 'राम तुम्हारे चरण-प्रेरणा स्रोत हमारे' के अंतर्गत संकलित हैं एवं अंतिम खंड अनूदित रचनाएं 'गूँज यह अनुसर्जना की' शीर्षक में संकलित हैं। आचार्य शास्त्री लिखते हैं, "मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैंने प्रयासपूर्वक बहुत कम कविताएँ लिखी हैं। ये कविताएँ परिस्थितियों के दबाव के कारण अनायास उभरती रही हैं। जीवन-क्रम में जैसे-जैसे मोड़ आये हैं, वैसे-वैसे स्वर इन कविताओं में मुखरित हुए हैं। इनमें राष्ट्रीयता, प्रेम और शक्ति की क्रमिक प्रधानता मेरे जीवन की विकास यात्रा के अनुरूप ही है। इसीलिए इस संकलन का नाम 'जीवन-पथ पर चलते-चलते' ही रखना मुझे उचित

लगा। "[2] आचार्य शास्त्री का यह काव्य संग्रह उनका समाज के प्रति समर्पण और उत्तरदायित्व को दर्शाता है। इन काव्यों के माध्यम से समाज का दस्तावेजीकरण और उनके प्रति अपनी आत्मभिव्यक्ति प्रकट करते हैं। आचार्य शास्त्री इस बात का उल्लेख करते हैं, "मैं बहुत विनम्रता के साथ कहना चाहता हूँ, कविता मुझे विश्व-ब्रह्माण्ड और समाज से ही नहीं, अपने आप से भी जोड़ती है क्योंकि वह उदात्त स्वार्थ और परमार्थ को, व्यक्ति और समाज को अपने में सँजोये रहती है।"[3] आलोचक डॉ. गोपाल राय ने लिखा है, "विष्णुकांत शास्त्री की कविता जटिल भाव-बोध की नहीं उद्बबोधन, उल्लास और समर्पण की कविता है। .... कविता उनके साहित्य का गौण पक्ष है, पर वह भीनी गंध के रूप में उनके समस्त लेखन में विद्यमान है।"[4] संग्रहित कविताओं में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, मानवता, और सामाजिक चेतना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उनकी रचनाएँ प्राचीन भारतीय मिथकों और साहित्य से प्रेरित हैं, जो करुणा, नैतिकता, और कर्त्तव्यपालन के साथ समाज की विसंगतियों पर भी मूक प्रतिरोध प्रकट करती हैं। आचार्य शास्त्री रचनाओं में भावाभिव्यक्ति के लिए अपने परिवेश को जिम्मेदार मानते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति जिस परिवेश में रहता है उसकी अभिव्यक्ति ही अपनी लेखनी के माध्यम से करता है।

आचार्य शास्त्री की स्वीकारोक्ति है, "मैं जिस परिवार में पैदा हुआ, पला-बढ़ा वह एक आस्तिक, संस्कारशील परम्परापुष्ट राष्ट्रवादी परिवार था। मेरे पिता पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्री संस्कृति और हिन्दी के बड़े विद्वान थे। अच्छे कवि थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्यापक थे। बनारस के साहित्यिक परिवेश का उस समय जो ध्रुपद था, वह कवि-सम्मेलन था। अपनी किशोरावस्था में ही मैंने बनारस में निराला को सुना, दिनकर को सुना, बच्चन को सुना, गोपाल सिंह नेपाली को सुना। आचार्य सीताराम चुतुर्वेदी, श्यामनारायण पांडेय, बेढब बनारसी, रुद्र बनारसी ये तो बनारस के कवि थे। ये तमाम लोग जिस तरह से काव्यपाठ करते थे, जैसे कवि सम्मेलनों में उनकी कविताओं को सराहा जाता था या कभी-कभी किसी-किसी को उखाड़ा जाता था, इसका मुझे प्रत्यक्ष अनुभव है। विक्रम की द्विसहस्राब्दी के अवसर पर एक बहुत बड़ा आयोजन आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ने किया था। उस कवि-सम्मेलन के लिए निराला जी आये थे, नेपाली जी आये थे और वे लोग हमारे ही घर पर ठहरे थे। हम लोग रोमांचित हो गये थे। हम निराला के साथ बात कर रहे थे, नेपाली से बात कर रहै है, बच्चन जी के साथ बात कर रहे हैं यह अनुभव ही रोमांचित कर देने वाला था। उस संस्कार ने किशोरावस्था में ही मुझको काव्यप्रेमी बनाया था।"[5] सच ही कहा है- संगत से गुण होत है, संगत से गुण जात। शास्त्री जी की रचना में निहित भाव, उसमें अभिव्यक्त भारतीय जीवन पद्धति, भारतीय संस्कृति की जो अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, उसमें उनका बाल संस्कार एवं किशोरावस्था का परिवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शास्त्री जी की कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का साहस, त्याग और बलिदान का वर्णन मिलता है। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के शूरवीरों को सम्मानित किया और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने का प्रयास किया। युवा मानस को कर्म के लिए प्रेरित करते हुए कवि ने वीरता, त्याग और संकल्प की उच्चतम सीमा का चित्रण किया है। कवि ने अत्यंत भावनात्मक और प्रेरणादायक भाषा का प्रयोग कर उस व्यक्ति को अमर बनाने का प्रयास किया है, जो न केवल अपने कर्त्तव्यों में सफल होता है, बल्कि काल और प्रकृति भी उसे सम्मानित करती हैं-

"छोड़ देंगी मार्ग तेरा विघ्न बाधाएँ सहम कर

काल अभिनंदन करेगा आज तेरा समय सादर।

गगन गायेगा गरजकर गर्व से तेरी कहानी

वक्ष पर पदचिह्न लेगी धन्य हो धरती पुरानी।।

कर रहा तू गौरवोज्ज्वल त्यागमय इतिहास निर्मित

विजय है तेरी सुनिश्चित।"[6]

कवि ने एक महानायक की महिमा का वर्णन किया है, जो अपने उद्देश्य और कर्त्तव्य में अडिग है। उसका साहस, दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति ऐसी है कि कोई भी विघ्न उसे रोक नहीं सकता। कवि ने यह भी कहा है कि समय भी इस नायक की महत्ता को स्वीकार करेगा, और उसकी अद्वितीयता काल के पटल पर अमिट छाप छोड़ेगी। पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु' लिखते हैं कि, "उनकी राष्ट्रीय भावनाओं की कविताओं पर एक भारतीय आत्मा और दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं जैसी ओजस्विता प्राप्त होती है।"[7]

"सदा प्रेरणा दे हमको यह स्वर अविनश्वर

माँ की पुकार पर हों सब के सब न्योछावर।

ऊँचा उठता रहे जगत् में झण्डा अपना

विश्व गगन में प्रतिपल चमके भारत भास्कर।।"[8]

इन पंक्तियों में काव्यगत सौंदर्य भी है; मातृभूमि के प्रति प्रेम और बलिदान की भावना की गहनता को सरल और प्रभावशाली शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ मातृभूमि के प्रति समर्पण-भाव प्रेरणा और गर्व के साथ व्यक्त हुआ है, जो पाठक के हृदय में देशप्रेम की भावना को जाग्रत करने में सफल होता है। इन पंक्तियों में कवि ने मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम, प्रेरणा, और आत्म-समर्पण की भावना व्यक्त की है। पहली पंक्ति में कवि हमें लगातार प्रेरित करने वाले स्वर की बात करते हैं, जो अमर (अविनश्वर) है। यह स्वर मातृभूमि की पुकार का प्रतीक है, जो हमें देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों की याद दिलाता रहता है और हमें देश की सेवा के लिए प्रेरित करता है।

'केशव का समाधान' नामक कविता में शास्त्री जी ने उन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है, जिसका समाधान केशव के अतिरिक्त कौन करेगा? यह प्रश्न खड़ा होता हैं। इन पंक्तियों में कवि ने समाज की गहरी समस्याओं और चुनौतियों का वर्णन करते हुए उनके समाधान की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला है। यहां "व्रत कठिन असिधार" का तात्पर्य उन कठोर और संयमी प्रयासों से है जो इन समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक हैं। कवि ने आगे "बिखरा मौन हाहाकार" के माध्यम से समाज में व्याप्त मौन चीख-पुकार को चित्रित किया है-

"कौन धारण कर सकेगा व्रत कठिन असिधार

सुन सकेगा कौन बिखरा मौन हाहाकार।

युग-युगों की ग्लानि संचित धो सकेगा कौन

ला सकेगा कौन गंगा की अमृतमय धार।।"[9]

कवि की चिंता है कि समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी संचित दोष, पाप और कुरीतियाँ हैं, जो अब एक गहरी ग्लानि के रूप में संचित हो गई हैं। इन्हें धोने का कार्य अत्यंत कठिन है, क्योंकि यह केवल बाहरी सुधार नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धि की भी माँग करता है। "गंगा की अमृतमय धार" का उल्लेख करते हुए कवि ने पवित्रता, शुद्धता और मुक्ति के प्रतीक के रूप में गंगा का आह्वान किया है। यह अमृतमय धार एक ऐसी स्थिति का प्रतीक है, जो संपूर्ण समाज का उद्धार कर सकती है, लेकिन प्रश्न यह है कि उस अमृतमय धार को समाज में कौन ला सकेगा।

दूसरे खंड की कविताओं में शास्त्री जी ने प्रेम के सकारात्मक पहलू को उजागर किया है। इन कविताओं में प्रेम के कारण जीवन में आए अच्छे बदलाव और सौंदर्य का वर्णन किया गया है। कवि की भाषा सरल और सौम्य है, जिसमें

उसकी प्रेम और समर्पण की भावना स्पष्ट है। वह कहता है कि उसने सौंदर्य को अपने प्रिय के दर्शन के बाद पहचाना, जो प्रेम और सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रतीक है। यहाँ प्रिय का चेहरा कवि के लिए सुंदरता और जीवन के प्रति एक नई दृष्टि का स्रोत बन जाता है-

"तुम्हें देखकर मैंने सुन्दरता को पहचाना

तुम्हें देखकर लगा कि जीवन तो है मुस्काना।

रहता था चुपचाप सिये इन अधरों को जैसे

तुम्हें देखकर लगा कि मुझको भी आता गाना। ।

दिखी नहीं थी कभी गली सपनों की दुनिया की

यह मेरा सौभाग्य की तुमको पा सपने मचले।

यह मेरा सौभाग्य कि तुम भी मेरे साथ चले।।"[10]

कवि प्रेम में आने के बाद उदासीनता से जीवन की ओर उन्मुख होता है। पहले मौन रहने वाला कवि अब गीतों में जीवन का आनंद पाता है। प्रेम ने उसे सकारात्मकता, खुशी, और उत्साह दिया है। प्रिय का साथ उसके जीवन को संपूर्ण और सार्थक बनाता है। अंत में कवि अपने भाग्य का आभार मानता है कि उसे ऐसा प्रिय मिला, जो जीवन की हर परिस्थिति में उसके साथ रहेगा। यह कविता प्रेम के सकारात्मक पक्ष को उजागर करती है और दर्शाती है कि प्रेम कैसे जीवन में रंग भरने का काम करता है-

"जीवन का पथ कितना दुर्गम, रह रह कर सिहरुँ,

हर ऊँची-नीची घाटी में तुमको याद करुँ। ।

चूर-चूर तन, सांस धौंकनी बढ़ता हूँ फिर भी

तुम मेरे रक्षक हो स्वामी तब क्यों कहीं डरुँ। ।"[11]

कवि ने जीवन के कठिन मार्ग को ऊँच-नीच और थकान भरे प्रतीकों से चित्रित किया है। "दुर्गम पथ" जीवन की बाधाओं का प्रतीक है, जिनसे कवि संघर्ष करता है। हर कठिनाई में, वह अपने आराध्य को याद कर मानसिक बल प्राप्त करता है, जो उसे सशक्त सहारा देता है।

"मैं निस्साधन दीन-हीन प्रभु और न कोई मेरा

एक गाँठ सौ फेरे वैसे मुझे भरोसा तेरा।

काल-व्याल मुँह बाये, जाने अगले पल क्या होगा

अतः इसी पल अपने चरणों में दे मुझे बसेरा। ।"[12]

कवि की भावनाओं में गहरी आत्मीयता और समर्पण झलकता है। वह स्वयं को असहाय और साधनहीन मानते हुए ईश्वर को अपना एकमात्र सहारा बताता है। "एक गाँठ सौ फेरे" का प्रतीक उसके सांसारिक मोह से दूर होने और केवल ईश्वर की शरण में संतोष खोजने का संकेत है। वह जीवन की कठिनाइयों से थक चुका है और मृत्यु को एक भयावह

सर्प मानता है, जो हर पल उसे निगलने को तैयार है। जीवन की नश्वरता को समझते हुए, कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसे अपने चरणों में शरण दें, जिससे वह मृत्यु के भय से मुक्त होकर शांति प्राप्त कर सके। आचार्य विष्णुकांत शास्त्री नें चिंतन प्रधान और अध्यात्मिकता के अतिरिक्त हास्य-व्यंग्यपरक कविताएँ भी लिखी हैं। नेताओं पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने लिखा है-

"गैर के काम में लगा सकता हो अड़ंगा

बात-की-बात में करवा सकता हो दंगा

झूठ बोले, मगर ताव से कि सच जान पड़े

नेता वही जो फिसल गढ़े में कहे हर गंगा। "[13]

बुद्धिजीवियों की अकर्मण्यता पर प्रहार करते हुए –

"हर बात औरों की कन्ने से काटी

खाई सच-झूठ की तर्कों से पाटी

जीत ली दुनिया कॉफी के प्यालों पर

शुद्ध बुद्धिजीवी की, स्वस्थ परिपाटी। "[14]

रविशंकर पांडेय लिखते हैं, "जैसे एक अध्यापक अपने छात्रों के मस्तिष्क में कुछ सूत्रबद्ध विचार स्थाई बनाने के लिए एकाधिक बार दुहराता है तथा जोर देता है, वैसे ही शास्त्री जी की कविताओं में सच्चरित्रता, नैतिकता, मानवमूल्यों के प्रति विश्वास, संघर्षशीलता, सत्य के प्रति प्रबल आग्रह, असत्य के प्रति स्पष्ट दुत्कार, राष्ट्रप्रेम और भारतीयता के प्रति जबरदस्त प्रतिबद्धता के दर्शन होते हैं।"[15] कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अनेक कविताओं का शास्त्री जी ने काव्यानुवाद किया है। इसके अलावा, उन्होंने जीवनानन्द दास की रचनाओं को भी हिन्दी में रूपांतरित किया है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवियों की कई कविताएं भी शास्त्री जी द्वारा अनुदित की गई हैं। अनुवाद के क्षेत्र में उन्हें विशेष पहचान बांगलादेश के मुक्ति संग्राम के दौरान, वहां के प्रमुख कवियों की रचनाओं के अनुवाद के कारण मिली है। कृपाशंकर चौबे, शास्त्री जी की अनुवादित कविता की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए लिखते हैं, "एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद केवल शब्दानुवाद और भावानुवाद भर नहीं होता है बल्कि उसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को भी अभिव्यक्त करना होता है। शास्त्री जी के काव्यानुवाद की विशेषता थी कि बांग्ला व हिन्दी दोनों भाषाओं के आंतरिक स्वभाव व बाह्य स्वरूप को अनुवाद प्रक्रिया के जरिये कोई नुकसान नहीं पहुंचा। बांग्ला भाषा की सहजता और बोधगम्यता को शास्त्री जी ने अक्षुण्ण रखा। "[16]

"हो ले अंधेरा और गाढ़ा

और भी भयावह रंग घिर आयें आकाश में

मुझ को डरा पाना

अब सम्भव नहीं

किनारों को डुबो देने वाला यह अंधेरा

रहेगा कितना देर

अंधेरे को चीर देने वाला गान है मेरे कण्ठ में

चाबी हे मेरे ही हाथ में आने वाले दिन में। "[17]

कविता अंधकार में आशा की किरण को प्रकट करती है। कवि अंधकार को चुनौती मानते हुए उसे आत्म-विश्वास और रचनात्मकता का प्रेरक मानता है। वह डर पर विजय पाकर, भविष्य की ओर सकारात्मक दृष्टिकोण से अग्रसर होता है, जहाँ 'गान' उसकी शक्ति और 'चाबी' उसके निर्णयों का प्रतीक है। कुमार कृष्ण लिखते हैं, "शास्त्री जी की कविताएँ तात्कालिक प्रतिक्रियाओं के स्थान पर सत्य की प्रतिष्ठा, मनुष्य की अनाहत जिजीविषा और असीम क्षमता को रेखांकित करने पर बल देती है।"[18]

विष्णुकांत शास्त्री की भाषा में सहजता, सरलता और ओजस्विता है। उन्होंने तद्भव और तत्सम शब्दों का सुंदर प्रयोग किया, जिससे उनके विचार और भावनाएं स्पष्टता से प्रकट होती हैं। उनकी शैली में भारतीय काव्य परंपरा की गूढ़ता और आधुनिकता का मिलाजुला रूप दिखाई देता है। संस्कृत का कुशल प्रयोग और पारंपरिक छंदों का उपयोग उनकी कविताओं को अद्वितीय काव्यात्मक सौंदर्य प्रदान करता है। रविशंकर पांडेय ने लिखा है, "एक ओर संस्कृतनिष्ठ क्लिष्ट अभीप्सित, जीवन्मृत, अस्थिशेष, विताड़ित, निःश्रेयस् जैसे शब्दों का, वहीं शहीदी-शान, जिंदगी, अनोखास जमाना, आइना जैसे उर्दु और फारसी के अलावा बोलचाल के अंग्रेजी एवं बांगला शब्दों की भी आवाजाही देखने को मिलती है। शास्त्री जी हिन्दी साहित्य में प्रध्यापक होते हुए भी अपनी कविताओं में आम बोलचाल की भाषा को अधिक महत्त्व और प्रश्रय दिया है, जिससे कविताएँ आम पाठक के लिए भी सरल, सहज और संप्रेषणीय बन सकी हैं। भाषाओं में आये हुए शब्दों में आपसी द्वन्द्व न होकर एक विचित्र अद्वैत है। भाषा अपनी बनावट व बुनावट में जादुई है।"[19]

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की काव्य चेतना में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता, और आध्यात्मिकता का अनोखा संगम देखने को मिलता है। उनकी कविताओं में समाज को जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास है। उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक हैं और युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और मूल्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके काव्य में न केवल साहित्यिक सौंदर्य है, बल्कि समाज और व्यक्ति के कल्याण का गहन भाव भी है। उनकी काव्य चेतना भारतीय संस्कृति, परंपरा, और जीवन मूल्यों से गहराई से प्रभावित थी। उन्होंने अपनी कविताओं में जीवन के विविध पक्षों को उजागर करते हुए समाज के विभिन्न मुद्दों पर संवेदनशीलता और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका साहित्यिक योगदान न केवल उनकी गहरी भाषा ज्ञान को दर्शाता है, बल्कि उनकी कविता में परंपरा और आधुनिकता का संतुलन भी परिलक्षित होता है। शास्त्री जी का साहित्य, भारतीय हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है और उनकी काव्य चेतना आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. सं. त्रिपाठी प्रेमशंकर, जीवन-पथ पर चलते चलते, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता, प्रथम सं., वर्ष-1999, पृ.xii
2. वही, पृ.-xiv
3. वही, पृ.- xii
4. वही, पृ.-vii

5. सं. जैथलिया जुगल किशोर, विष्णुकांत शास्त्रीः चुनी हुई रचनाएँ, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता,2003, पृ.-xi
6. वही, पृ.-03
7. पांडेय डॉ. मनोज कुमार, आचार्य विष्णुकांत शास्त्री-चिन्तक और चिन्तन, रंग प्रकाशन, इंदौर, प्रथम सं., वर्ष-2004, पृ.-137
8. सं. त्रिपाठी प्रेमशंकर, जीवन-पथ पर चलते चलते, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता, वर्ष-1999,पृ-.06
9. वही, पृ.-09
10. वही, पृ.-39
11. वही, पृ.-40
12. वही, पृ.-41
13. वही, पृ.-21
14. वही, पृ.-21
15. सं. त्रिपाठी प्रकाश, विष्णुकान्त शास्त्री सृजन के आयाम, वचन पब्लिकेशन, इलाहाबाद, प्रथम सं., वर्ष-2003, पृ.-328
16. वही, पृ.-110
17. वही, पृ.-81
18. सं., त्रिपाठी प्रेमशंकर, अभिनंदन ग्रंथ, श्री बड़ाबाजार कुमारसाभा पुस्तकालय, कोलकाता, वर्ष-2004, पृ.-58
19. सं., त्रिपाठी प्रकाश, विष्णुकान्त शास्त्री सृजन के आयाम, वचन पब्लिकेशन, इलाहाबाद, प्रथम सं., वर्ष-2003, पृ.-329